



# REET



## राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

### Level – II (विज्ञान वर्ग)

भाग – 2

हिन्दी



## विषय सूची

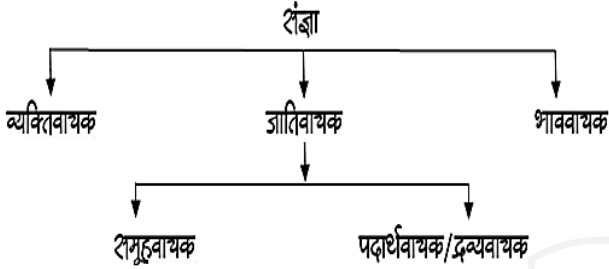
1.वर्ण, स्वर व व्यंजन	1
2.शब्द ज्ञान	13
3.तत्सम-तद्भव	16
4.संज्ञा	18
5.सर्वनाम	20
6.विशेषण	22
7.क्रिया	25
8.काल	27
9.लिंग	29
10.वचन	29
11.श्लेष	31
12.विदेशी भाषाओं के शब्द	34
13.संधि	37
14.समास	44
15.उपसर्ग	49
16.प्रत्यय	53
17.वाच्य	56
18.कारक	59
19.विशम चिह्न और उनके प्रयोग	69
20.वाक्य	73
21.वाक्य रचना	81
22.वाक्य शुद्धि	85
23.शुद्ध वाक्य	87
24.मुहावरे	94

25. लोकोक्ति	105
26. पद्यांश	119
27. पाठ योजना	127
28. शिक्षण विधियाँ	135
29. चर्चा	154
30. मापन व मूल्यांकन	156
31. भाषा	163

## संज्ञा

**परिभाषा :-**

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है- 'सम् + ज्ञा' अर्थात् सम्यक् ज्ञान करने वाला श्रुतः किसी भी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, वर्ग, भाव स्थिति आदि का परिचय करने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा का पर्याय है- नाम। किसी व्यक्ति (प्राणी), वस्तु स्थान, स्थिति, वर्ग, भाव, विचार के नाम को संज्ञा कहते हैं।



**संज्ञा के भेद:-**

व्यक्ति, गुण, वस्तु, भाव, स्थान आदि के आधारे पर संज्ञा के तीन भेद माने गये हैं -

### 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा:-

जो शब्द किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष या वस्तु विशेष का बोध कराते हैं, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - गौतम बुद्ध, हिमालय, ताजमहल, सीता, गंगा, जयपुर, रामायण आदि। व्यक्तिवाचक संज्ञा की विशेषता यह है कि (1) यह दुनिया में एक ही होती है और (2) इसको हम पहले से जानने के आधारे पर ही पहचान सकते हैं। गंगा/ताजमहल/रामायण को यदि हमने पहले से देखा है, समझा है तभी हम पहचान सकते हैं कि यह नदी तो गंगा है, यह भवन ताजमहल है, यह पुस्तक रामायण है, अज्ञानक पहली बार देखने से नहीं।

### 2. जातिवाचक संज्ञा :-

जो शब्द किसी प्राणी, पदार्थ या समुदाय की पूरी जाति/वर्ग (Class) का बोध कराता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे- लडका, पर्वत, पुस्तक, घर, नगर, झरना, कुत्ता आदि।

जातिवाचक संज्ञा तो एक वर्ग है और दुनिया में उसकी इकाईयाँ अनेक होती हैं। लडका जातिवाचक संज्ञा है और दुनिया में लडका वर्ग के अनेक विद्यमान हैं। जातिवाचक संज्ञा का आधारे है- वस्तु आदि का समान गुण, और पहले से उन वर्ग गुणों का ज्ञान होने पर वैसे ही गुण अन्य किसी में पहचान कर नई वस्तु/प्राणी को भी हम तुरन्त पहचान लेते हैं।

**प्रश्न:-** नीचे लिखे शब्दों को व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा के रूप में छांटिए-

ब्रह्मपुत्र, पत्थर, रंगमर्मर, ग्रेनाइट, फूल, कमल, हिमालय, अनाज, गेहूँ, कल्याणसोना (गेहूँ),

गाय, जर्सी गाय, फल आम, लैंगडा आम।

**उत्तर:-** ऊपर के शब्दों में केवल ब्रह्मपुत्र और हिमालय व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं शेष सभी जातिवाचक हैं दुनिया में व्यक्तिवाचक संज्ञा केवल एक होती है और जातिवाचक-अनेक।

### 1. द्रव्यवाचक :-

किसी पदार्थ या द्रव्य (द्रव यानी बहने वाली वस्तु-पानी, तेल, आदि, द्रव्य यानी पदार्थ जैसे- मिट्टी, चीनी, तेल आदि) का बोध करने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे- लोहा, सोना, घी, मिट्टी, तेल, दूध, लकड़ी, ऊन आदि।

इन संज्ञाओं हम गिन नहीं सकते। दो लोहा, चार सोना आदि नहीं कर सकते, ये अगणनीय संज्ञाएँ हैं और ये मात्रात्मक या परिमाणात्मक हैं। इनमें से कुछ बहुवचन बनते हैं जैसे- मिट्टी, मिट्टियाँ, लकड़ी-लकड़ियाँ आदि।

### 2. समूहवाचक :-

ये संज्ञाएँ अनेक गणनीय संज्ञाओं के समूह से बनती हैं, और वे एकवचन एवं बहुवचन दोनों रूपों में (सोना/सोनाएँ, कक्षा/कक्षाएँ) प्रयुक्त हो सकती हैं। ये शब्द किसी व्यक्ति के वाचक न होकर समूह या समुदाय के वाचक होते हैं, जैसे- सोना, कक्षा, मंडली, जुलूस, परिवार, पुस्तकालय आदि।

### 3. भाववाचक संज्ञा :-

जिन शब्दों से व्यक्तियों/पदार्थों के धर्म (Nature), गुण, दोष अवस्था (State), व्यापार (Activity), भाव स्वभाव या अवधारणा (Concept), विचार आदि का बोध होता है, वे भाववाचक संज्ञाएँ कहलाती हैं, जैसे कोमलता, बचपन, लम्बाई, बुढ़ापा, शत्रुता, शलाह, मातृत्व, श्रौचित्य, दासता, मित्रता आदि।

भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनती हैं :-

1. जातिवाचक संज्ञा से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगकर)-

लडका-लडकपन, मित्र-मित्रता, पशु-पशुता,  
 आदमी-आदमीयत, चिकित्सक-चिकित्सा, चोर-चोरी,  
 तरुण-तरुणाई, पुरुष-पुरुषत्व, मर्द-मर्दानगी आदि  
 ।

2. शर्वनाम से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगकर)-  
 निज-निजत्व, रूपना-रूपनापन, शर्व-शर्वत्व,  
 शर्म-शर्मकार, मम्-ममता, ममत्व आदि ।

3. विशेषण से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय  
 लगकर)-

बुढ़ा-बुढ़ापा, चतुर-चतुरता/चतुराई, मीठा-मीठास,  
 मधुर-मधुरता/माधुर्य, खट्टा-खट्टास/खट्टापन,  
 शरुण-शरुणिमा, कंजूर-कंजूरी, उचित-औचित्य,  
 लघु-लघुता, आलसी-आलस्य, विद्वान-विद्वता  
 गरीब-गरीबी, भूखा-भूख, परिष्कार,  
 धीर-धैर्य/धीरज आदि ।

4. क्रिया से शंज्ञा - (विभिन्न कृत प्रत्यक्ष  
 लगकर)-

चढना-चढाई, चलना-चाल, दौडना-दौड,  
 राजाना-राजावट, उतारना-उतार, कमाना-कमाई,  
 गाना-गान, जीना-जीवन, झुकना-झुकाव,  
 खेलना-खेल, थकना-थकान, पहुंचना-पहुंच,  
 जीतना-जीत, मिलाना-  
 मिलावट, हँसना-हँसी, पीना-पान आदि ।

5. अव्यय से - निकट-निकटता, दूर-दूरी,  
 नीचे-नीचता, ऊपर-ऊपरी, धिक्-धिक्कार आदि ।

इस प्रकार ता, त्व, पन, ई, आई, आ, इयत, आहट,  
 त, य आदि प्रत्यय लगाने से अन्य शब्द भाववाचक  
 शंज्ञाओं में परिवर्तित हो जाते हैं । हिन्दी में शंज्ञाएँ  
 लिंग, वचन तथा कारक द्वारा रूपना रूप निर्धारण  
 करती हैं । ये शंज्ञा के विकारक तत्व कहलाते हैं ।

## सर्वनाम

### परिभाषा-

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं -

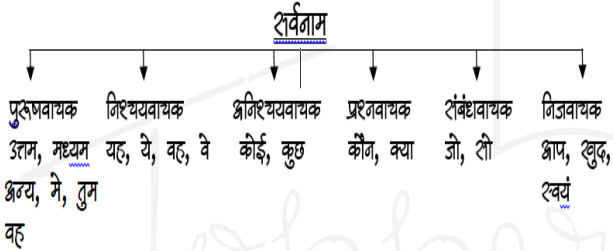
जैसे- मैं, तुम, वह, कौन, कोई, क्या आदि ।

सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है- 'शब्दका नाम' अर्थात् जो शब्द शब्दके नामों के स्थान पर लडका/लडकी/कमरा आदि सभी संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं ।

यह पुनरुक्ति दोषको मिटाने के लिए प्रयोग किया जाता है ।

### सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के निम्नलिखित 6 भेद हैं -



### 1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)-

वक्ता, श्रोता या किसी अन्य के लिए जाने वाले कथन (पुरुष) हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं । इसी आधार पर पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार माने गए हैं -

#### ➤ उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम (First Person)-

जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाला (वक्ता) या लिखनेवाला (लेखक) अपने लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं । मैं, मेरी, मेरा, मुझे, हम, हमारा, हमारी, हमको आदि उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम हैं, जैसे -

- मैं अपने स्कूल गया ।
- हम प्रदर्शनी देखने जाएँगे ।
- इस विषय में हमारा बोलना ठीक नहीं ।

#### ➤ मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम (Second Person)-

वक्ता या लेखक सुनने वाले (श्रोता) या पढ़नेवाले (पाठक) के लिए किए जाने वाले कथन हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम

पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं । तू, तुम, तेरा, तेरी, तुम्हारा, तुझे, तुम्हें, आप, आपका, आपकी, अपना, अपनी, आपको, अपने आदि मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम हैं । वाक्यों में इनका प्रयोग निम्नलिखित प्रकार के देखा जा सकता है ।

1. तू बहुत अच्छा लिखती है ।
2. तुम्हें गुरु जी ने बुलाया है ।
3. आप सबके लिए पूजनीय हैं ।
4. पहले अपने देखो ।

### अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम (Third Person)-

जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता या लेखक, वक्ता एवं श्रोता को छोड़कर किसी अन्य के लिए किए जाने वाले कथन हेतु किया जाता है, उन्हें अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं । यह, वह, ये, वे उसका, उसकी, इसे, उसे, इन्हें, उन्हें, उनका, उनकी, उनको, उसको आदि अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम हैं जैसे:-

- वह रोते-रोते लौ गई ।
- उसको बुलाकर समझाओं ।
- उन्हें अपनी गलती पर पछतावा है ।

### 2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)-

जिन सर्वनामों के द्वारा दूरवर्ती या समीपवर्ती व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं और निश्चित घटना व्यापार का बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं जैसे-

- यह कौन है ? यह तो श्याम है । (यहाँ 'यह' की और संकेत है, 'यह' पर जोर है ।)
- ये रहे वे जिन्हें मैं ढूँढ रहा था ।
- गीता का घर वह है ।
- वे जो बैठी हैं, अध्यापिकाएँ हैं ।

इन वाक्यों में यह, वह, ये, वे, निश्चयवाचक सर्वनाम हैं तथा यह, ये समीपवर्ती तथा वह वे सर्वनाम दूरवर्ती संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त हुए हैं ।

### 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)-

किसी अनिश्चित व्यक्ति, वस्तु, घटना, या व्यापार के लिए प्रयोग में आने वाले सर्वनाम अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे- कोई किसी, कुछ । सजीव प्राणियों के लिए 'कोई', 'किसी' और निर्जीव पदार्थों के लिए 'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है जैसे-

- शायद बाहर कोई आया है (व्यक्ति)
- किसी (व्यक्ति) से कुछ (वस्तु) मत लो ।
- हमें कुछ तो खाना पड़ेगा । (वस्तु)

#### 4. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)-

किसी वस्तु, घटना या व्यापार के विषय में प्रश्न का बोध करने वाले शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। कौन, किसे, किसने, क्या आदि शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं। इनमें भी कौन, किसे, किसने, किससे का प्रयोग व्यक्तियों के लिए और 'क्या, किसे, किससे' वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है उदाहरणार्थ-

- कवियों को किसने आमंत्रित किया था ? (व्यक्ति)
- बाजार जाने के लिए किसे कहूँ ? (व्यक्ति)
- बाहर कौन आया है ? (व्यक्ति)
- आप चाय के साथ क्या लेंगे ? (वस्तु)
- तुम किससे लिखोगे ? (वस्तु)

#### 5. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)-

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग एक शब्द/वाक्यांश का दूसरे शब्द / वाक्यांश से संबंध प्रकट करने के लिए (जो-सो) किया जाता है या जो प्रधान उपवाक्य से आश्रित उपवाक्यों का संबंध जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहा जाता है। जो-सो, जिससे, वह, जो-वह, जैसा-वैसा, जिसको-उसको, जिससे-उससे आदि शब्द संबंधवाचक सर्वनाम हैं, जैसे-

- जैसी करनी वैसी भरनी।
- जिससे देखो, वही अत्यधिक व्यस्त है।
- जितनी लंबी चादर, उतने ही पैर पसारिएं।

#### 6. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)-

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग कर्ता के लिए या कर्ता के साथ अपनत्व प्रकट करने के लिए किया जाता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। कुछ विद्वान निजवाचक सर्वनाम के वस्तुतः पुरुषवाचक सर्वनाम का ही एक भेद मानते हैं, और कुछ अलग। आप, अपने-आप, स्वयं, खुद स्वतः निज आदि निजवाचक सर्वनाम हैं यथा-

- मैं अपने-आप कार्यालय ढूँढ लूँगा।
- उसने खुद/स्वयं/स्वतः ही परेशानी मोल ले ली है।
- आप स्वयं चलकर निरीक्षण कर लीजिए।

इस प्रकार उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त अपने-आप, स्वयं, खुद निजवाचक सर्वनाम शब्दों का प्रयोग तीनों पुरुषों में (उत्तम, अन्य, मध्यम) में हो रहा है।

## विशेषण

### परिभाषा:-

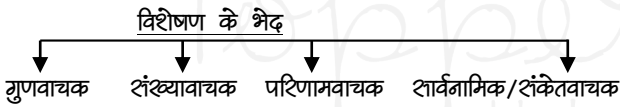
विशेषण वह शब्द-भेद है, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताता है। जैसे-

1. काली गाय अधिक दूध देती है।
- योग्य व्यक्ति सदैव आदर के पात्र होते हैं।
- कुछ लोग यहाँ आ रहे हैं।
- दो बच्चे खेल रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'काली' 'अधिक', 'योग्य' विशेषण क्रमशः गाय, दूध, व्यक्ति संज्ञाओं की विशेषता बताते हैं। इसी प्रकार 'कुछ' एवं 'दो' भी 'लोग' व 'बच्चों' (संज्ञाओं) के विशेषण हैं।

**विशेषण और विशेष्य-** जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं, वे 'विशेषण' और जिन संज्ञाओं या सर्वनामों की विशेषता प्रकट की जाती है, वे शब्द 'विशेष्य' कहलाते हैं।

**विशेषण के भेद :-** संज्ञा की विशेषता के प्रकार के आधार पर विशेषण के चार भेद माने गए हैं-



1. **गुणवाचक विशेषण :-** जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम (विशेष्य) के गुण-आकार, रंग, दशा, काल, स्थान आदि का बोध करते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं जैसे-

**गुण/दोष:-** अच्छा, बुरा, सरल, कुटिल, ईमानदार, सच्चा, बेईमान, झूठा, दानवीर, शिष्ट, दयालु, कृपालु, कजूरा, शांत, चतुर, गुरुरौल आदि।

**आकार:-** लंबा, छोटा, चौड़ा, चौकोर, तिकोना, गोल, बड़ा, ठिगना, नाटा, ऊँचा, नीचा, झंडाकार, त्रिभुजाकार आदि।

**रंग:-** काला, पीला, लाल, सफ़ेद, नीला, गुलाबी, हरा, सुनहरा, चमकीला, आसमानी आदि।

**स्वाद:-** खट्टा, मीठा, कड़वा, नमकीन, कसैला, तीखा आदि।

**स्पर्श:-** कठोर, नरम, खुरदरा, कोमल, चिकना, गरम आदि।

**गंध:-** सुगंधित, दुर्गंधपूर्ण, बदबूदार, खुशनुमा, सोंधा, गंधहीन।

**दिशा:-** उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी, पाश्चात्य, भीतरी, बाहरी आदि।

**दशा:-** नया, पुराना, जीर्ण-शीर्ण, पिलपिला, ढीला, स्वस्थ, रोगी, सूखा, गाढ़, पतला, पिछला, जमा आदि।

**काल:-** प्राचीन, नवीन, आधुनिक, भावी, ऐतिहासिक, साप्ताहिक, मासिक, शुभ का भूला, नया, पुराना, ताजा आदि।

**स्थान:-** ग्रामीण, भारतीय, रूसी, जापानी, बंगाली, देशी, विदेशी, बाहरी, तुर्की, वन्य, पहाड़ी, मैदानी, आदि।

**अवस्था:-** युवा, बूढ़ा, तरुण, प्रौढ़, अघेड, मुग्धा, धीर, गंभीर, अधीर, सहनशील आदि।

**वाक्यों में कुछ उदाहरण हैं-**

- अधिक गर्म दूध नहीं पीना चाहिए।
- आम मीठा है।
- संगमरमर चिकना पत्थर है।
- आँखों की ज्योति के लिए हरा रंग अच्छा माना गया है।

उपर्युक्त वाक्यों में गर्म, मीठा, चिकना, हरा गुणवाचक विशेषण हैं जो क्रमशः दूध की अवस्था, आम के स्वाद, पत्थर का स्पर्शबोध और रंग के गुण को व्यक्त रहे हैं।

2. **संख्यावाचक विशेषण :-** गणनीय संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता का बोध करनेवाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-

- कक्षा में पचास लड़के अध्ययन करते हैं।
- माता जी ने एक दर्जन केले खरीदे हैं।
- झगडे में कई लोग मारे गए हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में पचास, एक दर्जन, कई संख्यावाचक विशेषण हैं जो कि क्रमशः लड़के, केले, लोग संज्ञाओं की संख्यागत विशेषता का बोध करते हैं। जातिवाचक या भाववाचक होता है।

**संख्यावाचक विशेषण के भेद :-** संख्यावाचक विशेषण के विशेष्य की निश्चित और अनिश्चित संख्या के आधार पर दो भेद किए गए हैं।

- निश्चित संख्यावाचक
- अनिश्चित संख्यावाचक

(क) **निश्चित संख्यावाचक :-** जहाँ विशेषण की निश्चित संख्या का बोध होता है।



- कक्षा में दस विद्यार्थी आए हैं।
- दो दर्जन केले बीस रुपये के हैं।
- आधा दसवाजा खुला हुआ है।

इन वाक्यों में आए हुये दस, दो दर्जन, आधा शब्द निश्चित संख्या का बोध करते हैं।  
 संख्यावाचक विशेषणों में अपूर्णांक विशेषण- आधा, पौन, डेढ, एक चौथाई आदि तथा क्रमवाची विशेषण जैसे- पहला, दसवाँ आदि, गुणा/ आवृत्तिवाचक विशेषण, जैसे- दुगुना, चौगुना, समूहवाचक विशेषण, जैसे- दोनो, चारो तथा प्रत्येकवाचक जैसे प्रति व्यक्ति, हर आदमी आदि होते हैं।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध न कराकर उनकी संख्या का अस्पष्ट अनुमान प्रस्तुत करते हैं, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं, जैसे- कुछ, कई, थोड़े, कम, बहुत, काफी, अगणित, दशियों, हज़ारी, अधिक, कोई-सौ, सौ-एक, करीब सौ, कोई दो सौ इत्यादि। वाक्यों में कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं-

- कुछ लडके मैदान में खेल रहे हैं।
- मेरे पास बहुत से रुपये हैं।
- बस थोड़े पन्ने लिखने बाकी हैं।
- ट्रेन-दुर्घटना में सैकड़ों व्यक्ति मारे गए।
- सड़क पर कोई-सौ लडके खड़े थे।

इन वाक्यों में कुछ, बहुत-से, थोड़े, सैकड़ों, कोई-सौ अनिश्चित संख्याओं का बोध करते हैं।

3. परिमाणवाचक :- मात्रात्मक, द्रव्यवाचक संज्ञा या सर्वनाम की माप-तौल संबंधी विशेषता को प्रकट करने वाले शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं, जैसे-

- पहलवान प्रतिदिन पाँच लीटर दूध पी जाता है।
- भिखारी को थोड़ा आटा दे दो।

यहां 'पाँच लीटर दूध' 'थोड़ा आटा' व आटे का माप है जो गण्य नहीं है, केवल मापा जा सकता है, अतः वे परिमाणवाचक विशेषण हैं।

परिमाणवाचक विशेषण माप-तौल की निश्चितता व अनिश्चितता के आधार पर दो प्रकार के माने गए हैं-

(क) निश्चित परिमाणवाचक- जो संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध करते हैं, उन्हें निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं, यथा-

- चार लीटर दूध लेकर आओ।

- बाजार से दस किलो चीनी ले आना।
- यह चैन पंद्रह ग्राम सोने की है।
- उसके पास बीस एकड़ जमीन है।
- हमें दस ट्रक भूसा चाहिए।

उपर्युक्त वाक्यों में चार लीटर, दस किलो, पंद्रह ग्राम, बीस एकड़, दस ट्रक क्रमशः दुध, चीनी, सोना, जमीन और भूसे के निश्चित माप हैं, इसलिए ये निश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक- जिन विशेषणों के द्वारा संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध न होकर अनिश्चित परिमाण का बोध होता है, उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं जैसे-

- वह ढेर सारा मक्खन खा गया। (अनिश्चित मक्खन)
- मुझे भी कुछ नाश्ता दे दो।
- थोड़ा पानी देना।
- जरा-सा आचार दे दो।
- यहाँ ढेरों आम पड़े हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में 'ढेर सारा', कुछ, थोड़ा, जरा-सा, ढेरों अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं, जो क्रमशः मक्खन, नाश्ता, पानी, आचार, आम की अनिश्चित माप का बोध करते हैं। अधिक मात्रा का बोध करने के लिए परिमाणवाचक विशेषण के साथ 'और' जोड़ दिया जाता है।

4. सार्वनामिक विशेषण :- जो सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर आने के बजाय संज्ञा के पहले लगकर उसकी विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

सार्वनामिक विशेषण के चार भेद :-

(क) निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक

विशेषण :- जिनसे संज्ञा या सर्वनाम निश्चयवाचकता का

संकेत होता है, यथा

- उस व्यक्ति को बुलाइए। (व्यक्ति विशेष की ओर संकेत है)
- क्या यह पुस्तक तुम्हारी है? (पुस्तक की ओर संकेत है)

(ख) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण :-

जिनसे संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चयवाचकता का बोध होता है, जैसे-

- वहाँ कुछ भी वस्तु खाने के लिए नहीं मिलेगी
- छत पर कोई व्यक्ति खड़ा है।

(ग) प्रश्नवाचक शार्वनामिक विशेषण :- इन विशेषणों से संज्ञा या शर्वनाम से संबंधित प्रश्नों का बोध

होता है जैसे :-

- वहाँ मैदान में कौन छात्र दौड़ रहा है ?
- तुम्हारे लिए बाजार से क्या चीज लाऊँ ?
- तुम्हें किस लड़के ने मारा है ?

उपर्युक्त उदाहरणों में प्रयुक्त 'कौन' 'क्या' 'किस' आदि संज्ञा के पहले लगे हैं तथा विशेष्य से संबंधित प्रश्नों का बोध करा रहे हैं।

(घ) संबंधवाचक शार्वनामिक विशेषण :- जिन विशेषणों से एक संज्ञा या शर्वनाम का संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य संज्ञा या शर्वनाम शब्द के साथ जोड़ा जाता है जैसे:-

- जो घड़ी मैंने कल खरीदी थी, वह खो गई है।
- जिस कार्य को करने से नुकसान होता है, उस पर विचार करना मूर्खता है।
- वह व्यक्ति शामने जा रहा है, जिससे तुम्हारा झगडा हुआ था।

इन उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट है कि जो-वह, जिस-उस, वह-जिससे शार्वनामिक विशेषणों का संबंध वाक्यों में प्रयुक्त अन्य विशेष्यों- क्रमशः घड़ी, कार्य और व्यक्ति से स्थापित किया गया है।

## क्रिया

वाक्य में जिस शब्द-समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं, जैसे:-

- मोहन खाना खा रहा है ।
- हवा बह रही है । (करना-हवा बहने की क्रिया कर रही है ।)
- पुस्तक अलमारी में है । (होना)

उपर्युक्त वाक्यों में 'खा रहा है' 'बह रही है', 'है' क्रियापद हैं ।

वाक्य में कर्म की संभावना के आधार पर भेद :-

अकर्मक और शकर्मक क्रिया:- किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद हैं - शकर्मक और अकर्मक ।

(क) अकर्मक क्रिया :- जिस वाक्य में क्रिया का फल कर्म पर न पडकर केवल कर्ता पर ही पडता है अर्थात् जिस क्रिया के करने में कर्म की आवश्यकता ही नहीं होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे:-

- नरेश दौड रहा है ।
- चिडिया उड रही है ।
- बच्चा रोता है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'दौड रहा है', 'उड रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता-पदों पर ही पडता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के क्रिया केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती हैं ।

(ख) शकर्मक क्रिया :- जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया में कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे शकर्मक क्रिया कहते हैं । शकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नहीं सकती, जैसे :-

1. राम पत्र लिखता है ।
2. लडके ने बेर खाए ।
3. मोहित पानी पीता है ।
4. अध्यापक प्रश्न पूछते हैं ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न पूछा जाता है और उतका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया शकर्मक होती है, राम क्या लिखता है ? (पत्र), लडके ने क्या खाए ? (बेर), मोहित ने क्या पिया ? (पानी) ।

क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद :-

अपूर्ण क्रिया - कुछ क्रियाओं का अपने-आपमें अर्थ पूर्ण ही नहीं होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते हैं, अर्थात् क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे-

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है । ('मूर्ख'-विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नहीं होगा ।)
- अशोक जी हमारे गुरु थे । (गुरु-संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नहीं होता ।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों में प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरु-दोनों संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य में पूर्णता नहीं आती । ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते हैं, जो विशेषण और संज्ञा दोनों ही हो सकते हैं ।

पूर्ण क्रिया - जिस क्रिया-पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप में गैर-क्रियापद (संज्ञा-विशेषण) की आवश्यकता नहीं हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते हैं, जैसे :-

1. लडका रोता है ।
  2. लडका पढता है ।
- यहाँ 'रोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है । ये दोनों पद क्रियापद ही हैं । अतः ये पूर्ण क्रियाएँ हैं ।

क्रिया की संरचना के आधार पर भेद :-

प्रेरणार्थक क्रिया - जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है । यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है । प्रेरणार्थक क्रियाओं में 'वा' लगता है ।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए ।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया ।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई ।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ शकर्मक होती हैं ।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया- मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने में सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे -

- मैं गया हुआ था । (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है ।)
- सुरेश चुन रहा था । (चुन- मुख्य क्रिया है तथा रहा था- सहायक क्रियाएँ )

**नामधातु क्रिया:-** जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत में प्रत्यय जोड़ने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नामधातु क्रिया होती है जैसे :-

- रीठ ने मकान हथियाया । (हाथ-संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया । (फिल्म-संज्ञापद)
- लडकी बतियाई । (बात संज्ञापद)

**पूर्वकालिक क्रिया:-** जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर उठी पल दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है । पूर्वकालिक क्रिया के अंत में कर लगता है- सोकर, उठकर, जाकर आदि ।

- बच्चे दूध पीकर सो गए । (सोने से पहले दूध पीया ।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया ।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया ।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य में पहली क्रिया पूर्वकालिक नहीं है, बल्कि दोनों ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ हैं क्योंकि दोनों क्रियाएँ दो अलग-अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ हैं ।

**तात्कालिक क्रिया:-** यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है । इसमें और मुख्य क्रिया में समय का अंतर नहीं होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है ।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया ।
- वह नहाने ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया ।

**संयुक्त क्रिया:-** जब दो या दो से अधिक क्रिया-धातुओं के योग क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं । संयुक्त क्रिया में कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे :-

- वह खाना खा चुका होगा ।
- दीक्षा लिखा करती होगी ।
- पानी बरसने लगा है ।
- मैं यहाँ रोज आ जाया करता हूँ ।
- दोपहर में लोग सो रहे होते हैं ।

इन सभी वाक्यों में पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ हैं और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद-समूह संयुक्त क्रियाएँ हैं । सहायक क्रिया एक

भी हो सकती है । (पढ़ता है) और एक से अधिक भी जैसे कि ऊपर के वाक्यों में है ।

## काल

प्रायः लोग काल और समय को एक ही मान लेते हैं परन्तु ये एक नहीं हैं। समय एक भौतिक इकाई (भौतिक शक्त) है तथा काल एक व्याकरणिक (भाषिक) अवधारणा है। किसी क्रिया के घटित होने के समय के प्रति वक्ता का जो मानसिक बोध वाक्य में व्यक्त होता है, वही व्याकरणिक काल है।

चूंकि 'समय' को भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीन वर्गों में बांटा जाता है, उसी के आधार पर काल को भी परंपरागत व्याकरण में वर्तमानकाल, भूतकाल तथा भविष्यकाल तीन वर्गों में बांट लिया जाता है।

1. वर्तमान काल (Present Tense) :- कथन के क्षण के साथ-साथ क्रिया का होना अर्थात् वर्तमान काल के अंतर्गत आता है, जैसे-

- वह किताबें बेचता है।
- आप क्या करते हैं ?
- मैं खाना खा रही हूँ।

2. भूतकाल (Past Tense) :- कथन के क्षण के पूर्व क्रिया व्यापार का होना अर्थात् बीते हुए समय में होना भूतकाल है, जैसे:-

- मैंने चाय पी ली है।
- मैं आगश गया था।
- बच्चा चला गया।
- वे पत्र लिख रहे थे।

3. भविष्य काल (Future Tense) :- कथन के क्षण के बाद क्रिया का होना अर्थात् भविष्य में होना भविष्य काल जैसे :-

- वह कल दिल्ली जा रहा है। (क्रिया वर्तमान काल- जैसी किन्तु है भविष्य काल)
- मैं काम नहीं करूँगा।
- कल हम इस समय परीक्षा दे रहे होंगे।

### वर्तमान काल के भेद

वर्तमान काल के तीन भेद माने गए हैं-

1. सामान्य वर्तमान (Present Indefinite) - जिस क्रिया से वर्तमान काल में क्रिया का होना या करना पाया जाता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं, जैसे -
  - लडका जाता है।

- लडके जाते हैं।
  - लडका रोज जल्दी उठता है।
- सामान्य वर्तमान में आदत होने का संकेत तथा हमेशा होने वाली / घटनाएँ अवधारणाएँ भी सम्मिलित रहती हैं, जैसे :-

- यह लडका हमारे घर आता रहता है।
- दो और दो हमेशा चार होते हैं।
- ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा ऋतु आती है।

2. अपूर्ण वर्तमान (Imperfect) :- क्रिया के जिस रूप में यह पता चले कि कार्य वर्तमान काल में शुरू हो गया है लेकिन अभी तक पूरा नहीं हुआ है तथा अभी भी जारी है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं। इसे सातत्य वर्तमान (Present Continuous) भी कहा जा सकता है, जैसे :-

- लडका खेल रहा है।
- शिक्षक पढ़ रहे हैं।

3. संदिग्ध वर्तमान - क्रिया के जिस रूप द्वारा काम के वर्तमान काल में होने या करने में अनिश्चय का बोध हो उसे संदिग्ध वर्तमान के नाम से जाना जाता है, जैसे :-

- लडके बाजार से आते होंगे।
- पिता ली दफ्तर पहुंचते होंगे।

संदिग्ध वर्तमान में मुख्य क्रिया वर्तमान काल ही रहती है - आता/पहुंचता/पढ़ता/चलता तथा सहायक क्रिया के रूप में होगा/होंगे/होगी रहती है।

### भूतकाल के भेद

भूतकाल के निम्नलिखित 6 भेद हैं -

1. सामान्य भूत (Simple Past या Past Indefinite)- जिस काल से भूतकाल में क्रिया के सामान्य रूप से समाप्त हो जाने का संकेत मिलता है, उसे सामान्य भूत कहते हैं जैसे :-
  - लडका आया।
  - लडकी ने खाना खाया।
2. आरम्भ भूत - क्रिया के जिस रूप से क्रिया के अभी-अभी समाप्त होने का बोध हो, उसे आरम्भ भूतकाल कहते हैं। 'आरम्भ' का अर्थ है- निकट। आरम्भ भूत के यह बोध होता है कि कार्य अभी-अभी, निकट भूत में ही पूर्ण हुआ है, जैसे -
  - वह अभी-अभी आया है।

- उठने हाल में चाय पी है ।

3. पूर्ण भूत (Past Imperfect)– भूतकाल की जिस क्रिया से यह सूचित होता है कि कोई कार्य भूतकाल में बहुत पहले समाप्त हो चुका था, वह पूर्ण भूत कहलाता है, जैसे –
- लडका खाना खा चुका था ।
  - लडकी कल दिल्ली गई थी ।
  - मेरे उठने से पहले सूरज उग चुका था ।

4. अपूर्ण भूत (Past Imperfect या Incomplete Past)– भूतकाल की जिस क्रिया से यह विदित हो कि कार्य भूतकाल से प्रारम्भ हो चुका था, चल रहा था, किन्तु काम पूरा नहीं हुआ था, जारी था, उसे अपूर्ण भूत कहते हैं, जैसे –
- लडका पढ़ रहा था ।
  - माँ खाना बना रही थी ।

5. संदिग्ध भूत – भूतकाल की जिस क्रिया के करने की शक्यता होने पर अनिश्चितता (अर्थात् निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि कार्य हुआ था क्या । ) प्रतीत हो, वह संदिग्ध भूत कहलाता है, जैसे –
- लडकी ने कविता पढ़ी होगी ।
  - लडके ने गीत गाया होगा ।

संदिग्ध वर्तमान और संदिग्ध भूतकाल दोनों में होगा/होगी/होंगे/होंगी सहायक क्रियाएँ तो समान रहती हैं किन्तु संदिग्ध वर्तमान में मुख्य क्रिया वर्तमानकाल की (पढ़ता/चलता) होती है तथा संदिग्ध भूतकाल में भूतकाल की (पढ़ा/चला) रहती है ।

6. हेतु-हेतुमद् भूत (Conditional Past)– जिस क्रिया से यह जाना जा सके कि कार्य भूतकाल में हो सकता था, परन्तु किसी अन्य कार्य के हो सकते या न हो सकने के कारण (हेतु) से हो सका या न हो सका, वहाँ हेतु-हेतुमद् भूत होता है, जैसे–
- कपिल पढ़ता तो उत्तीर्ण हो जाता ।
  - कपिल पढ़ इसलिए उत्तीर्ण हो गया ।
  - यदि वर्षा होती तो फसल हो जाती ।

## भविष्य काल के भेद

भविष्य काल के तीन भेद माने गए हैं –

1. सामान्य भविष्य (Future Indefinite या Simple Future) भविष्य काल की जिस क्रिया से यह सूचित हो कि क्रिया भविष्य में एक या अनेक बार होगी, उसे सामान्य भविष्य कहते हैं, जैसे –

- माली पौधों में पानी देगा ।
- हम सब खेलने जाएँगे ।
- हम आज शाम आपके यहाँ आ रहे हैं । (क्रिया वर्तमान जैसी किन्तु भविष्य काल)

2. संभाव्य भविष्य (Doubtful Future) – क्रिया के जिस रूप से भविष्य काल में कार्य के होने की संभावना पाई जाए, वह संभाव्य भविष्य कहलाता है, जैसे –

- वह शायद कल खेरे आ जाएगा ।
- हो सकता है, मेहमान कल ही आ जाएँ ।

संभाव्य भविष्य की क्रियाओं से कार्य के होने का निश्चित पता नहीं चलता, केवल उसकी संभावना का बोध होता है, जैसे 'संभव है' 'हो सकता है' आदि पदों से व्यक्त किया जाता है ।

3. सातत्यबोधक भविष्य (Future

Continuous) जिस क्रिया– रूप से भविष्य में कार्य के जारी रहने का/निरंतरता का बोध हो, उसे सातत्यबोधक भविष्य कहते हैं, जैसे –

- कल हम इस समय परीक्षा दे रहे होंगे ।
- हमारे पहुंचने के समय पुनीत पढ़ रहा होगा ।

## लिंग

हिंदी में दो लिंग हैं-पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। संस्कृत का नपुंसक लिंग हिंदी में पुल्लिंग या स्त्रीलिंग के रूप में विभाजित हो गया है और इसी से अहिंदीभाषियों को हिंदी भाषा की लिंग की अवधारणा को समझने में बहुत कठिनाई होती है। दरअसल कौनसे शब्द पुल्लिंग हैं और कौनसे स्त्रीलिंग इसके कोई स्पष्ट नियम नहीं हैं, हिंदी के व्याकरणों ने जितने नियम बनाए हैं उतने ही अपवाद भी उपस्थित हो गए हैं। यदि आकारांत शब्द पुल्लिंग हैं और ईकारांत शब्द स्त्रीलिंग हैं तो आकारांत शब्द स्त्रीलिंग भी हैं और इकारांत/ईकारांत शब्द पुल्लिंग भी हैं-

आकारांत पुल्लिंग	आकारांत स्त्रीलिंग	इकारांत/ईकारांत पुल्लिंग	ईकारांत स्त्रीलिंग
झंडा, घडा	दशा, माला	कवि, मोती	झंडी
मटका, देवता	लता, कथा	पति, दही	घडी
पंखा, नाला	भाषा, धारा	रवि, घी	मटकी
घनिया, काढा	कविता, पूजा	हरि, पानी	देवी
गजरा, पुदीना	श्रुजा, शिक्षा	यति	पंखी
कहवा, खीरा	परीक्षा, विद्यवा	मुनि	गली
रायता, करेला	आज्ञा, विद्या	शशि	
झुमका, लोहा	दया, कृपा		
ताँबा, पतीला			
पारा, मूँगा			

## वचन

हिंदी में वचन दो होते हैं- एकवचन और बहुवचन। संस्कृत में द्विवचन भी होता था किन्तु हिंदी में दो के लिए भी बहुवचनवाला रूप ही चलता है।

- वचन का प्रभाव संज्ञा (लडका-लडके) सर्वनाम (मैं-हम), विशेषण (छोटा लडका छोटे लडके) तथा क्रिया (पढता है-पढते हैं) पर पडता है।

संज्ञाओं में एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम एवं तिर्यक रूप-

1.

आकारांत पुल्लिंग	एकवचन	तिर्यकरूप	बहुवचन	तिर्यक रूप
एकांतांत में संज्ञा	धागा	धागे (में)	धागे	धागों (में)
आ → ए	लडका	लडके (में)	लडके	लडकों (में)
	कमरा	कमरे (में)	कमरे	कमरों (में)
	मुर्गा	मुर्गे (में)	मुर्गे	मुर्गों (में)

आकारांत का अर्थ है जो शब्द आ स्वर के साथ समाप्त होता है; जैसे-लडका, पंखा। इसी प्रकार ईकारांत (लडकी), एकारांत (लडके) एवं ऊकारांत (भालू) शब्द होते हैं।

2.

आकारांत के अलावा शेष संज्ञा रूपों का एकवचन एवं बहुवचन एक-जैसा होता है।	एकवचन	तिर्यकरूप	बहुवचन	तिर्यक रूप